Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 27/June/2023 IJRAW: 2023; 2(7):190-192 Accepted: 30/July/2023

डिजिटल (अंकीय) विभाजन की चुनौतियां

*[1]Rekha Kumari

*[1]Assistant Professor, Maitreya College of Education and Management, EPIP Campus, Hajipur, Bihar, India.

सारांश

21वीं सदी महान परिवर्तनों की धूरी है जिसमें अनेक यंत्र और नवाचारों का विकास हुआ है।आधुनिकता के इस दौर में लोगों की निर्भरता इंटरनेट पर होती जा रही है।अतः वर्तमान समय को डिजिटल क्रांति का दौर कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा।इंटरनेट ने ना केवल शिक्षा का वैश्वीकरण किया है वरन सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों को भी प्रभावित किया है। वास्तव में सूचना एवं प्रौद्योगिकी आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। आईसीटी के उपयोग ने चीज़ों को सरल और आसान बना दिया है।आधुनिकता के इस दौर में भारत को अन्य देशों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने हेतु डिजिटल रूप से मजबूत होना जरूरी है। वर्तमान समय में एक शब्द प्रचलित है डिजिटल डिवाइड जिसका अर्थ है, ऐसे लोगों के बीच का अंतर है जो आईसीटी के उपयोग में निपुण है तथा जो तकनीकी रूप से पिछड़े हुए हैं। डिजिटल डिवाइड को दूर करने के प्रयास के रूप में भारत सरकार द्वारा "डिजिटल भारत" अभियान चलाया जा रहा है।इस अभियान की सफलता के लिए व्यापक रूप से लोगों को आईसीटी का प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। जैसा कि हम जानते हैं भारत की 67% आबादी गांव में रहती है जिनको डिजिटल मजबूती प्रदान किए बिना डिजिटल डिवाइड को दूर करना संभव नहीं है। अतः हमारे सामने डिजिटल डिवाइड को दूर करने के रास्ते में कई चुनौतियां हैं। इस पेपर में डिजिटल डिवाइड, इसके कारण, दूर करने के उपाय एवं भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं पर चर्चा की जाएगी।

मुख्य शब्द: डिजिटल डिवाइड, डिजिटल भारत, सूचना एवं संप्रेषण तकनीक

परिचय

वर्तमान समय में कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया को डिजिटल निर्भरता प्रासंगिक है। जहां तक भारत की बात करें तो इसे गांवों का देश कहा जाता है। जैसा कि महात्मा गांधी ने भी कहा है कि "भारत की आत्मा गांवों में बसती है।" भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ी आबादी वाला देश है जिसकी आधी से ज्यादा आबादी गांव में बसती है। अतः गांव को विकसित किए बिना भारत का विकास संभव नहीं है। गांवों के विकास के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजना भी चलाई जा रही है जैसे कि 'आदर्श ग्राम योजना' इसके तहत संसद के सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष एक गांव को गोद लिया जाना तथा उस गांव का संपूर्ण विकास करना सुनिश्चित किया गया है। यद्यपि इस योजना के द्वारा कुछ ऐसे आदर्श गांव बनाए गए हैं परंतु जितना विकास होना चाहिए था उतना दिखाई नहीं देता है। इसका एक कारण है गांव में रहने वाले लोगों का सरकार द्वारा चलाई जा रही इन योजनाओं के प्रति जागरूक नहीं होना है। आज चाहे खरीदारी हो, बैंकिंग हो, यात्रा टिकट बुक करना हो, होटल बुक करना हो, या रोजमर्रा की आवश्यकताओं के बारे में जानकारी हासिल करनी हो सभी में डिजिटल माध्यम हमारी मदद करता है और इसके लिए इंटरनेट की आवश्यकता पड़ती है। अतः इंटरनेट हमारे लिए बुनियादी आवश्यकता बन गई है।

- **डिजिटल डिवाइड:** इंटरनेट एवं आईसीटी के उपयोग एवं प्रभाव के बारे में व्याप्त आर्थिक एवं सामाजिक असमानता को अंकिय(डिजिटल) विभाजन कहते हैं। विभिन्न आर्थिक सामाजिक स्तरों पर तकनीकी में व्याप्त विभेद डिजिटल डिवाइड कहलाता है। दूसरे शब्दों में विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले लोगों को सूचना एवं प्रौद्योगिकी तथा इंटरनेट के इस्तेमाल हेतु मिलने वाले अवसरों के बीच अंतर को डिजिटल डिवाइड माना जाता है। इसका एक मुख्य पक्ष है सूचना तकनीकी। सूचना तकनीकी सूचना का आदान प्रदान तेजी से करता है। सूचना तकनीक उन लोगों के बीच अंतर करने में महत्वपूर्ण है जिनकी पहुँच तकनीकी तक है तथा जिनकी पहुँच तकनीकी तक नहीं है।

भारत को विकसित देश बनाने हेतु यह जरूरी है कि यहां के लोगों को सूचना एवं संप्रेषण तकनीक तथा इंटरनेट के इस्तेमाल में निपुण बनाया जाए। डिजिटल डिवाइड के कई तथ्य एवं आयाम हैं। अतः डिजिटल डिवाइड को अच्छे से समझने के लिए इन आयामों को समझना जरूरी है। डिजिटल डिवाइड के इन आयामों में विभिन्न सामाजिक मुद्दे, शिक्षा से संबंधित मुद्दे एवं सामाजिक एकता शामिल हैं। इन आयामों को नीचे दिए गए तालिका से समझा जा सकता है।

डिजिटल डिवाइड के आयाम

i). **सेवा की उपलब्धता:** डिजिटल डिवाइस के व्यापक उपयोग हेतु आईसीटी सेवा मुक्त रूप से सभी के लिए उपलब्ध होनी चाहिए।

*Corresponding Author: Rekha Kumari

ii). **सीखने के अवसर:** सीखने के अवसर की पहचान करना एक महत्वपूर्ण आयाम है।

iii). **जागरूकता:** जागरूकता डिजिटल डिवाइड का एक महत्वपूर्ण आयाम है।डिजिटल डिवाइस का समुचित उपयोग तभी संभव है जब व्यक्ति को डिजिटल डिवाइस की विशेषताओं एवं सीमाओं का समुचित ज्ञान हुआ।

iv). **अनुभव:** आईसीटी से पूर्ण एवं उचित लाभ उठाने हेतु व्यक्तियों में अनुभव होना जरूरी है।

v). **प्रौद्योगिकी महारत:** प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कहां और कैसे किया जाए व्यक्तियों में इसकी समझ आवश्यक है।

vi). **कौशल:** तकनीकी से लाभ उठाने हेतु सही काम के लिए सही कौशल बहुत जरूरी है।

vii). **भाषा:** तकनीकी के अधिकतम उपयोग में भाषा वाधक नहीं होना चाहिए।

viii). **लिंग:** तकनीकी से लाभ उठाने में लिंग बाधक नहीं होना चाहिए, जबकि भारत में लगभग 16% महिलाएं ही मोबाइल इंटरनेट से जुड़ी हुई हैं।

ix). **सामाजिक सशक्तिकरण:** सामाजिक ढांचा ऐसा होना चाहिए जो प्रत्येक व्यक्ति को सूचना एवं संप्रेषण तकनीक से लाभ उठाने में सहायक हो

- **भारत में डिजिटल डिवाइड के कारण:** भारत में विभिन्न जाति धर्म और भाषा के लोग रहते हैं। यहां के ज्यादातर लोग गांव में बसते हैं जिनका मुख्य पेशा कृषि हैं। उनके सामने कई सामाजिक आर्थिक और शैक्षिक समस्याएं हैं। अतः भारत जैसे देश में डिजिटल डिवाइड के कई कारण है जो निम्नलिखित हैं—

  i). **डिजिटल साक्षरता:** कंप्यूटर तथा सूचना एवं संप्रेषण तकनीक के बारे में व्यक्तिगत ज्ञान डिजिटल साक्षरता कहलाता है जो डिजिटल डिवाइस के समुचित उपयोग में सहायक होता है।यदि कोई व्यक्ति मोबाइल फोन या स्मार्टफोन का उपयोग करता है तो इसका यह मतलब कतई नहीं है कि वह व्यक्ति डिजिटल है। व्यक्ति तभी डिजिटल साक्षर हो सकता है जब उसे डिजिटल डिवाइस के एप्लीकेशन एवं तकनीक के बारे में सही ज्ञान हो, जिससे कि वह इसका इस्तेमाल आसानी से कर पाए। इस प्रकार देखा जाए तो भारत में डिजिटल साक्षरता की कमी डिजिटल डिवाइड का एक महत्वपूर्ण कारण है वर्ष 2016 में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में डिजिटल साक्षरता की दर 10% से भी कम है। इस प्रकार डिजिटल साक्षरता डिजिटल डिवाइड की एक बड़ी चुनौती है।

  ii). **भाषा:** भारत में डिजिटल डिवाइड का एक बड़ा कारण भाषा भी है। ज्यादातर ऑनलाइन उपयोग की भाषा अंग्रेजी है, जबकि भारत में विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। जिनमें से बहुतेरे लोगों को अंग्रेजी भाषा का समुचित ज्ञान नहीं है। ऐसी स्थिति में उनके लिए डिजिटल डिवाइस का उचित एवं सही इस्तेमाल संभव नहीं है।

  iii). **इंटरनेट:** प्रौद्योगिकी के समुचित उपयोग हेतु इंटरनेट का होना बहुत जरूरी है भारत के अधिकतर आबादी गांव में निवास करती है जहां इंटरनेट की समस्या बनी रहती है।

  iv). **आर्थिक असमानता:** भारत में समाज के विभिन्न स्तर पर लोगों के आय के अवसर एवं आय में असमानता है। भारत कृषि प्रधान देश है। यहां के अधिकतर लोग कृषि पर निर्भर है। उनकी आय इतनी कम है कि वह अपने बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति भी सही ढंग से नहीं कर पाते हैं। उनके लिए डिजिटल डिवाइस खरीदना तो दूर की बात है। यदि खरीद भी लेते हैं तो उनके पास ना तो इंटरनेट की सुविधा होती है और ना उन्हें डिजिटल डिवाइस की विशेषताओं एवं सीमाओं की जानकारी होती है। अतः आर्थिक असमानता अंकीय विभाजन का एक बहुत बड़ा कारण है।

  v). **कम साक्षरता दर:** भारत में दुनिया के कई देशों की तुलना में साक्षरता दर कम है।शैक्षिक रूप से पिछड़े लोग सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं। अतः शैक्षिक असमानता भी डिजिटल डिवाइड का एक कारण है।

  vi). **डिजिटल असमानता:** भारत में विभिन्न भौगोलिक एवं सामाजिक आर्थिक वर्ग के लोग रहते हैं। इनमें आईसीटी के बारे में ज्ञान व्यक्तिगत रूप से असमान है। जब लोगों में आईसीटी के बारे में समुचित ज्ञान ही नहीं है तो वे इसका उपयोग भी नहीं कर पाते हैं।

  vii). **सूचना का उपयोग:** भारत में जहां एक ओर ऐसे लोग हैं, जो डिजिटल डिवाइस की ओर उन्मुख है। वे किसी भी तरह की सूचना तुरंत और आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। वहीं दूसरी ओर ऐसे लोग भी हैं, जो डिजिटल डिवाइस के प्रति जागरूक नहीं है। उन तक सही समय पर सूचना नहीं पहुंच पाती है। यह दृश्य शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच साफ-साफ देखा जा सकता है।

डिजिटल डिवाइस ना केवल चीजों को आसान बनाती है,बल्कि उनका समय एवं अतिरिक्त खर्च भी बचाती है जो इसका सही इस्तेमाल जानते हैं। उदाहरण के लिए नेट बैंकिंग एवं एटीएम मशीन का इस्तेमाल करने वाले लोगों को बैंकों की लंबी कतार में खड़ा नहीं होना पड़ता है।

डिजिटल डिवाइड को दूर करने के उपाय एवं भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएं

i). **ई पाठशाला:** ई पाठशाला को सेंट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी और नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग के द्वारा विकसित किया गया है। इसकी मेजबानी नेशनल इनफॉर्मेटिक्स सेंटर द्वारा किया जाता है। यहां पर एनसीईआरटी टेस्ट बुक, हिंदी, अंग्रेजी एवं उर्दू में उपलब्ध है। ये सारी किताबें भारत के लोकल भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। यह खासतौर पर शिक्षकों एवं छात्रों के लिए बहुत उपयोगी है।

ii). **सुगम्य पुस्तकालय:** यह भारत का सबसे पहला और बड़ा डिजिटल पुस्तकालय है। यहां लगभग 328900 किताबें उपलब्ध है। जिसे लोग ऑनलाइन पढ़ सकते हैं। यह किताबें अलग-अलग फॉर्मेट में भी उपलब्ध हैं, ताकि लोगों के लिए इसे सुगम बनाया जा सके। अतः सुगम्य पुस्तकालय डिजिटल डिवाइड के इस खाई को पाटने की दिशा में किया गया महत्वपूर्ण प्रयास है।

iii). **भीम:** यह एप्लीकेशन पैसे के लेनदेन को आसान बनाता है। इसका इस्तेमाल कर लोग आसानी से अपने पैसे एक जगह से दूसरी जगह भेज सकते हैं। इसके द्वारा बैंक-टू-बैंक भी पेमेंट किया जा सकता है। इस एप्लिकेशन का उपयोग मोबाइल में भी किया जा सकता है।

iv). **प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान:** यह एक प्रशिक्षण कार्यक्रम है, जिसके अंतर्गत 14 वर्ष से 60 वर्ष तक के आयु वाले नागरिकों तक कंप्यूटर तथा डिजिटल डिवाइस की पहुंच सुनिश्चित करना है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को डिजिटली सशक्त बनाना है। प्रत्येक परिवार में कम से कम एक व्यक्ति को डिजिटल साक्षर बनाना इसका परम उद्देश्य है।

v). **अनारक्षित टिकट मोबाइल एप्लीकेशन के द्वारा:** यह भारतीय रेल एवं भारत सरकार द्वारा विकसित किया गया ऐप

है जिसकी सहायता से लोग आसानी से अनिरक्षित टिकट बुक कर सकते हैं। इसके पहले सिर्फ आरक्षित टिकट ही ऑनलाइन बुक होता था। इस ऐप का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को कैशलेस बनाना भी है।

निष्कर्ष

वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए हम कह सकते हैं कि सरकार द्वारा किए गए प्रयासों को सफल बनाने के लिए लोगों को व्यक्तिगत रूप से जागरूक होने की जरूरत है। अच्छी जिंदगी जीने के लिए कम से कम प्रत्येक व्यक्ति को डिजिटल डिवाइस के बारे में बुनियादी जानकारी होनी चाहिए। जब प्रत्येक व्यक्ति डिजिटल साक्षर हो जाएगा तो डिजिटल डिवाइड खुद-ब-खुद समाप्त हो जाएगा। किसी भी देश को विकसित होने के लिए डिजिटली सशक्त होना बहुत जरूरी है। यदि ऐसा नहीं हुआ तो देश आर्थिक शैक्षिक और सामाजिक रुप से भी पिछड़ जाएगा। अतः डिजिटल डिवाइड विकसित एवं पिछड़ेपन के अंतर को उजागर करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Government of India, Ministry of finance. (2002).
2. Economic survey 2001-2002, Retrieved July 12, 2002 from http://indiabudget.nic.in/es2001-02/welcome.html
3. Government of India, Ministry of education (2001). Educational Statistics-2001, Retrieved July 12, 2002 from http://www.education.nic.in
4. Government of India, Ministry of Rural Development. Retrieved June 1, 2002 from http://rural.nic.in
5. ITTA. (2001). State of the INTERNET 2001. Washington: ITTA and USIC
6. डिजिटल डिवाइड समावेशन, समानता के लिए एक चुनौती: नीति आयोग, 16 अप्रैल 2022